Historicity Research Journal
ISSN : 2393-8900

Impact Factor :1.4152 (UIF)
Volume - 3 | Issue - 1 | September - 2016

जनजातीय समाज में सामाजिक परिवर्तन पर प्रभाव

श्रीमती सुनीता पन्द्रो
शोधार्थी , एम.ए. नेट क्वाली फाइड ,
(समाज शास्त्र) , बरकातउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल .

प्रस्तावना

जनजातीय जनसंख्या की दृष्टि से भारत विश्व में दूसरा स्थान है, प्रथम स्थान पर अफ्रीका है। भारत में कुल जनसंख्या का ८.०८ प्रतिशत प्रतिनिधिव्व जनजातीय जनसंख्या का है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में आदिकाल से जनजातियां वन,पहाड़ों एवं नदी घाटी के मैदानो में निवास करती आ रही है, अतः इन्हे वनजाति, वनवासी, आदिवासी,आदिम जाति, वनराज, गिरिराज आदि नामों से सम्बोधित किया जाता है।

वौदिक एवं संस्कृत साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि आर्यों के आगमन के पूर्व से भारत में अनेकों आदिम मानव समुदाय (Indigenous human groups) निवास करते चले आ रहे थे। आर्यो की सभ्यता विकसित थी जिस वजह से इन आदिम जातियों को आर्यों ने भील, कोल, किरात, किन्नर, बन्जारा, आदिवासी, वनवासी, राक्षस, असुर, राक्षस, वनराज, निषाद, भत्स्य आदि नामों से सम्बोधित किया। इन्ही नामों को अन्य धार्मिक एवं पैराणिक ग्रन्थों में भी देखा गया।

ब्रिटिश हुकूमत ने शासन की सुविधा के लिये भारत में जो जातियां भारतीय वर्ण व्यवस्था के अन्तर्गत नही आती थीं, उन्हे ट्राइब के नाम से सम्बोधित किया। ये जनजातियां दूरस्थ वनों, पहाड़ियों, पर्वतो एवं समुद्रतटीय क्षेत्रों मे निवास करती थी। वर्तमान भारत के विभिन्न क्षेत्रों में, जनजातीय कार्य विभाग, भारत शासन के अनुसार कुल ६१३ जनजातियां निवास करती है।

भारत शासन एवं प्रान्तीय शासन के प्रयासों द्वारा इन आदिवासियों को देश मुख्य धारा से जोड़ने के लिए निरन्तर प्रयास किये जा रहे है औवर अन्य समाजों के समान आदिवासी समाज भी विकास एवं परिवर्तन की दिशा में अग्रसर है। कुछ अत्यधिक दूररथ क्षेत्रों को छोड़कर अधिकांश क्षेत्रो के आदिवासी समाज में भी अत्यधिक परिवर्तन देखा जा रहा है। जनजातीय समाज में आ रहे परिर्वतन के मुख्य कारण इस प्रकार है सकारात्मक प्रभावीकरण, संस्कृतिकरण, पुनर्जनजातिकरण, नगरीकरण, औद्योगीकरण, पश्चिमीकरण एवं इन तमाम तथ्यों के क्रियाशील होने के परिणाम स्वरूप जनजातियों की जीवनशैली में अत्यधिक परिवर्तन आया है। जनजातियों में आये इस परिवर्तनव की दो दृष्टियों से देखा जा सकता है प्रथम सकारात्मक पक्ष एवं द्वितीय नकारात्मक पक्ष।

जनजातीय समुदायों की सभ्यता-संस्कृति एवं जीवनशैली पर प्रभाव मुख्यतः जनजातीय सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक संबंध, विवाह, संस्कृति, आर्थिक क्रियाकलापों एवं कार्य पद्धति में परिवर्तन देखा जा रहा है। इन तथ्यो का अध्ययन कर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

1.जनजातीय सामाजिक व्यवस्था पर प्रभाव

जनजातियों की अपनी स्वयं की सामाजिक व्यवस्था होती है जो कि गोत्र या संगोत्रता (Kinship) पर आधारित होती है। एक ही गोत्र के सभी आदिवासी एक परिवार, वंश, कुल, उपजाति एवं एक ग्राम के रूप में निवास करते है। ये सभी सुख एवं दुःख को मिलकर झेलते हैं। इनमें संगोत्रीय संबंध अत्यधिक गहन होते है। समुदाय के किसी भी निर्णय में सम्पूर्ण गोत्र या गोत्र के प्रमुख व्यक्तियों को शामिल किया जाना अनिवार्य होता है, कोई भी निर्णय इनके बिना संभवस नही होता है। सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं धार्मिक कार्यो में परस्पर सहयोग से ही कार्य किया जाता है।

आधुनिकीकरण, औद्योगीकरण एवं नगरीकरण के प्रभाव के कारण समीपस्थ क्षेत्रों में आदिवासी नगरीय एवं औद्योगीकरण इकाईयों के समीप बस गये है एवं नगरीय जीवन शैली को स्वीकार करते हुए जीवन-यापन कर रहे हैं। इसका प्रमुख प्रभाव उनकी व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर अधिक पड़ा है। ये नगर की स्वंतत्र जीवन शैली के अनुरूप ढल गए हैं। इनके इनव क्षेत्रों में बस जाने के परिणाम स्वरूप ये गोत्रीय बंधन, संयुक्त परिवार कुल के बंधन से बाहर निकल आये है। ये अब संगोत्रीय आधारित व्यवस्था के स्थान पर मित्रता पर आधारित समाज में रहने लगे है। इस प्रकार से सम्पूर्ण आदिवासी सामाजिक व्यवस्था में परिर्वतन

देखा जा सकता है।

2.जनजातीय सामाजिक संबंधो पर प्रभाव

आधुनिकीकरण की व्यवस्था ने जनजातीय परस्पर सामाजिक संबर्धो पर भी अपना प्रभाव दिखाया है। एक परिवार, एक कुल एवं एक जातीय व्यवस्था में रहने की वजह से सामाजिक संबंधों का पारस्परिक आदान-प्रदान, उत्सर्वों, त्यौहारो के अवसरों पर होता था परन्तु जब कोई जनजातीय परिवार नगरीय एवं अन्य क्षेत्रों में बस जाता है तो उनका उनके परिवार से निरन्तर संबंध एवं मेल-मिलाप कम हो जाता है। दूर बस जाने के कारण अपने गांव वापस जल्दी-जल्दी आना महंगा होता है, अतः अपने गांव आना कम हो जाता है, परिणाम स्वरूप सभी उत्सवों, त्यौहारों एवं कार्यक्रमों में शामिल होना संभव नही होता है। इस प्रकार का व्यवहार उनके पारिवारिक, सजातीय संगोत्रीय संबंधों को प्रभावित करता है।

3.जनजातीय विवाह पर प्रभाव

जनजातीयों में विवाह संस्था अत्यधिक मजबूत एवं महत्वपूर्ण होती है। विवाह हेतु वर या वधू चुनने के लिये जनजातियों में भी मापदंडों में परिवर्तन हो गये हैं। शिक्षित होने के परिणाम स्वरूपव अपने जीवन साथी को अब युवा वर्ग स्वयं ही पसन्द करता है। आदिवासियों में सामान्य निर्धारित आयु से पूर्व अर्थात बाल्यावस्था में ही विवाह हो जाना आम बात थी, लेकिन पढ़-लिख जाने के कारण अब उनकी विवाह आयु में वृद्धि हो गई है एवं बाल विवाह लगभग समाप्ति की दिशा में हैं। विवाह के दौरान दूल्हा-दुल्हन के पहनावे में भी परिवर्तन देखा जाता है साथ ही दहेज, महंगे उपहारों को देने का प्रचलन हो गया है।

4. संस्कृति पर प्रभाव

जनजातिय संस्कृति का एक विशेष महत्व एवं पहचान है जो अन्य संस्कृतियों से बिल्कुल भिन्न है। जनजातियों मे इनके विश्वास, व्यवहार, रीति-रिवाज, परम्पराएं विधि, परम्परागत ज्ञान, कला, संगीत, नृत्य आदि कलाएं होती है। गैर आदिवासी समुदायों से इनकी संस्कृति पूर्णतः भिन्न होती है। आधुनिकता के प्रभाव ने इन्हें भी नही छोड़ा है। आजकल के आदिवासी बच्चे अपनी परम्परागत विधाओं को सीखने में कोई भी दिलचस्पी नही लेते हैं। बालक-बालिकाएं जो कि समीपस्थ नगरीय एवं कस्बाई स्कूलों में पढ़ने जाते है वे आधुनिक शिक्षा के साथ-साथ आधुनिक विश्वास, व्यववहार एवं परम्पराओं को अधिक ध्यान देते है एवं उन्हे सीखने का प्रयास करते हैं अर्थात् ये अपनी संस्कृति छोड़ आधुनिक संस्कृति अपनाने लगे हैं।

5. अर्थव्यवस्था पर प्रभाव

जनजातीय अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि एवं वनों पर आधारित होती थी परन्तु आजकल कृषि एवं वनों पर आधारित अर्थव्यवस्था का स्थान उद्योगों पर आधारित बाजार अर्थव्यवस्था ने लिया है। जनजातियों में मासिक वेतन, लाभ एवं बचत की अवधारणा ने जोर पकड़ा है। नगरीकरण, औद्योगीकरण एवं आधुनिकीकरण के कारण सेवा क्षेत्रा, लधु उद्योगों, फुटकर विक्रेता, गुमटी, दुकान, रिक्शा-ठेला, मजदूरी एवं कुली के कार्यो की ओर आकर्षित किया है।

कृषि पर आधारित व्यवस्था में भी अत्यधिक परिवर्तन आया है। कृषक अब अपेक्षाकृत नगर फसल विशेषकर सब्जी उगाना पसन्द करते है, एवं लधु वनोपज जड़ी बुटिया कन्दमूल जिसको कि समीपस्थ नगर के बाजार में बेच कर तुरन्त एवं अधिक पैसा प्राप्त किया करते हैं।

शिल्पी एवं कलाकार भी अपनी कलाकृतियों को नगरीय बाजार में अधिक एवं अच्छी कीमतों में बेचते है। अधिक बिक्री एवं मांग की वजह से ये कलाकार अपने उत्पाद को नगरीय नागरिकों की आवश्यकतानुसार बनाते है एवं अधिक कमाते है।

6.शिक्षा पर प्रभाव

आदिवासियों में आधुनिकता का सर्वाधिक प्रभाव शिक्षा के क्षेत्र में देखा जा सकता है। नगरीय सभ्यता के सम्पर्क में आने के परिणाम स्वरूप आदिवासी समुदाय भी शिक्षा की ओर आकर्षित हुए हैं तथा आधुनिक शिक्षा के महत्व को समझने लगे हैं। आदिवासियों को इस बात का ज्ञान हो चला है कि शिक्षित आदिवासी को आसानी से नौकरी मिल जाती है। आदिवासियों ने यह भी देखा कि शिक्षित व्यक्ति अपेक्षाकृत एक उच्च या अच्छा जीवनयापन कर रहा है एवं नौकरी के द्वारा वह अधिक सम्पन्न हो सकता है। अतः आदिवासी अपने बच्चो का नगरीय क्षेत्रों में अध्ययन हेतु भेजने लगे है यहां तक कि अपनी लड़कियों को नगरों के स्कूल-कॉलेजों में भी भेजना पसन्द करते है। जागरूकता के फलस्वरूप वे शासन द्वारा प्रदत्त विभिन्न सुविधाओं का लाभ लेने से वंचित नही रहते है। अच्छी-अच्छी शिक्षण संस्थाओं में अध्ययन करते हैं। छात्रावास एवं होस्टलों आदि में निवास करते हैं। सम्पन्न परिवार के बच्चों को बड़ी-बड़ी निजी संस्थाओं में अध्ययन एवं नौकरी हेतु भी भेजा जाता है।

7.जनजातीय धर्म पर प्रभाव

सामान्य तौर पर जनजातियां प्रकृति पर विश्वास करती हैं। ये धरती माता एवं बड़ा देव या बूढ़ा देव की आराधना करते हैं और ये ही उनकी सुख-समृद्धि एवं कष्टों के लिये उत्तरदायी माने जाते हैं। फसलों की पैदावर के लिये भी इन्ही देवताओं की प्रसन्नता मानी जाती है। ये अपनी फसलों में उत्तम बीज, उर्वरक एवं अन्य नई तकनीकों का प्रयोग नही करते एवं ऐसा माना जाता है कि इनका प्रयोग करने से देवता कुपित हो जायेंगे और सर्वनाश हो जाएगा। इस प्रकार की धार्मिक मान्यताएं अब धीरे-धीरे समाप्त होती चली जा रही हैं खाद, बीज आदि को अब ये धर्म से नही जोड़ते हैं। अब ये जनजातियाँ खाद, बीज एवं नवीन तकनीकी का भी प्रयोग

करने लगी हैं।

व्याधियों एवं बीमारियों के दौरान ये दवाओं आदि का सहारा न लेकर गुनिया-ओझा के माध्यम से झाड़-फूँक के द्वारा उपचार करते थे। भूत-प्रेत एवं आत्माओं पर विश्वास रखते थे। नगरीय सम्पर्क में आने के पश्चात् अब ये एलोपैथिक दवाओं एवं डॉक्टरों से उपचार कराने लगे हैं।

हिन्दू धर्म परम्परानुसार धन की देवी लक्ष्मी एवं ज्ञान की देवी सरस्वती की पूजा दीपावली एवं वसन्त पंचमी के अवसर पर अधिकांश जगहों में की जाने लगी है। लक्ष्मी पूजा धन-दौलत एवं सम्पन्नता हेतु एवं सरस्वती की पूजा परिवार में शिक्षा एवं ज्ञान की प्राप्ति के लिए की जाती है। देवी शारदा पूजन जवारे विर्सजन आठे चढ़ाया जाता है खीला मिट्टवा एवं खेरोदाई पूजन भी किया जाता है उत्सवों एवं त्यौहारों में लाउडस्पीकर के माध्यम से भजन एवं धार्मिक गीतो को सुनते हैं। बलि के स्थान पर शाकाहारी भोजन बनाया जाता है। इनके अतिरिक्त हनुमान एवं श्रीराम भगवान की भी आराधना की जाती है। इस प्रकार जनजातियों में धार्मिक विश्वास, व्यवहार एवं मूल्यों में एक बड़ा परिवर्तन देखा जा रहा है।

8.जनजातीय राजनैतिक संस्थाओं पर प्रभाव

जनजातीय समुदायों की अपनी राजनैतिक व्यवस्था होती है जिसमें ये अपनी विभिन्न प्रकार की पारिवारिक एवं सामुदायिक समस्याओं का निराकरण कर लिया करते हैं। भारतीय कानून व्यवस्था में इनकी मान्यता है। समाज में मुख्य राजनैतिक संस्थाएं, बुजुर्गों की सभा, ग्राम प्रधान, ग्राम पचांयत आदि होती हैं। ये संस्थाएं समाज पर नियंत्रण स्थापित करने के लिए उत्तरदायी होती हैं। नगरीकरण एवं आधुनिकीकरण के प्रभाव से परम्परागत राजनैतिक संस्थाओं का प्रभाव अपेक्षाकृत कम होता चला जा रहा है। जनजातियों में अब यह सामाजिक नियंत्रण जनजातीय राजनैतिक संस्थाओं के हाथ से निकलकर सामान्य नागरिको की भांति, पुलिस, थाना, न्यायालय एवं प्रशासन की ओर स्थानान्तरित होता जा रहा है संविधान द्वारा आदिवासियों को विशेष राजनैतिक सत्ता एवं अधिकार दिये गये है। इनके द्वारा विभिन्न प्रकार की राजनैतिक समितियों एवं संस्थाएं बनायी गई है।

राजनैतिक संस्थाओं में महिलाओं को उचित भागादारी दी जाती है। इनके विभिन्न महिला मंडल भी स्थापित किये गये हैं। ये ग्राम पचांयत, विधायक एवं सांसद के आरक्षित पदों पर चुनाव लड़कर प्रतिनिधित्व करती है।

9.जनजातीय घरों एवं घरेलू उपकरणों पर प्रभाव

आधुनिकता के प्रभाव के पूर्व आदिवासी अपने घरों का निर्माण मिट्टी, लकड़ी, घास-फूस एवं कवेलू से करते आ रहे है परन्तु आधुनिकीकरण के प्रभाव के चलते ये अपने घर सीमेन्ट, पक्की ईट, खिड़कियों दरवाजों, रसोई, स्नानागार, संडास एवं जल संरक्षण की व्यवस्था के साथ निर्मित करने लगे हैं। विभिन्न क्षेत्रों मे कार्य करने वाले आदिवासी अपने निवास स्थानों में वे सभी सुविधाएँ एकत्र कर लेते है जो कि किसी उचच जाति के व्यक्ति के घरों में होती हैं। बहुत से आदिवासियों के मकान बहुमंजिला भी होते है जो कि नगरों एवं औद्योगिक संस्थाओं के नजदीक होते हैं।

पूर्व में जनजातीय लोग दरवाजे, खिड़कियों, जल निकासी, प्रसाधन, रसोई आदि अपने निवासों में नही बनाते थे। इसके साथ-साथ घर गृहस्थी के सामान में भी परिवर्तन देखा जा रहा है। ये बर्तन आदि उपकरण स्टील, प्लास्टिक, कांच आदि के उपयोग करने लगे हैं जबकि पूर्व में ये सिर्फ लोहा, पीतल, कांस्य एवं एल्युमीनियम के ही बर्तन उपयोग करते थे। इनके घरों में लकड़ी, प्लास्टिक एवं केन का फर्नीचर भी उपलब्ध रहता है।

10. जनजातीय खेलकूद पर प्रभाव

जनजातियों में खेल के बहुत ही सीमित साधन होते थे। ये अपने खेलों में पत्तियाँ, पत्थर के टुकडे, विभिन्न किस्म के बीज, पुष्प, फल एवं पंखो को प्रयुक्त करते थे। इनके प्रमुख खेल लुका-छिपी, बाघ-बकरी, डोल-पाटा, कबड्डी एवं चीका है। बच्चे युवा होने पर लाशी, माला, तीर, धनुष, तलवार आदि से मनोरंजन करते थे। आधुनिकता के दौर में आने के बाद ये अब क्रिकेट, बॉलीबॉल, हॉकी रिंग, बैडमिंटन, रोप जम्प, ताश, शतरंज एवं कैरम आदि खेलते हैं। नगरीय खेलों का प्रचलन उपकरणों के अभाव में भी ग्रामीण अंचलो में देखा जाता है।

11. जनजातीय मनोरंजन के साधनों पर प्रभाव

आदिवासियों में मनोरंजन के मुख्य साधन लोकगीत, लोकनृत्य, नाटक, नौटंकी लोकोक्तियाँ, कहावतें आदि थे, परन्तु अब ये सभी एक सीमित दायरे तक ही सिमट कर रह गये है। आजकल रेडियो, ट्रांजिस्टर, टेपरिकार्डर, सी डी प्लेयर, टी.वी, सर्कस आदि गाँव-गाँव में देखे जा सकते है। अधिकांश आदिवासी इन सभी मनोरंजन के साधनों से अच्छी तरह से भिज्ञ है नये सिनमा के गाने आर्केस्ट्रा द्वारा ग्रामीणांचलिक एवं आदिवासी गीतों का भी प्रचनल हो गया है।

12. जनजातीय संचार के साधनों पर प्रभाव

विकास की दिशा में अग्रसर होने के पूर्व आदिवासी यात्रा पैदल चल कर पूर्ण करते थे। अत्यधिक बीमार व्यक्ति को अस्पताल तक ले जाने के लिए चारपाई या खरोती को चार व्यक्ति कंधो पर उठाकर ले जाते थे पर आज रिक्शा, साईकिल, मोटर साईकिल, टेम्पो कार बस, ट्रक आदि साधनों का उपयोग करने लगे हैं। आदिवासियों मे संचार के बड़े सीमित साधन होते हैं। ये अपने सन्देश को तालियों, ध्वनि, ढोल, संगीत यंत्र तीरों, लोक नाट्य, नृत्य एवं सीानीय बाजारों के माध्यम से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाते थे, लेकिन आधुनिकीकरण के प्रभाव के कारण रेडियो, टी.वी., फोन, सिनेमा, लाउडस्पीकर, समाचार पत्र

पुस्तकें, पत्रिकाएं आदि माध्यमों का प्रचलन गॉव-गॉव एवं आदवासी समुदायो के मध्य सर्वत्र देखा जा सकता है

13. जनजातीय आभूषण एवं वेश–भूषा का प्रभाव

आदिवासी क्षेत्रों मे ग्रामीण आदिवासी कारीगरों द्वारा निर्मित वस्त्रों को ही आदिवासी स्त्री एवं पुरूष पहना करते हैं, लेकिन आधुनिकीकरण का प्रभाव इस क्षेत्र मे अत्यधिक देखा जा रहा है। अब आदिवासी रेडीमेड वस्त्र या मशीनों द्वारा निर्मित वस्त्रों को पहनना पसन्द करते है। रेडीमेड वस्त्र कम दरो पर आसानी से समीपी गॉव के बाजारों, हाटों आदि में मिल जाते हैं। ये अच्दे लगते हैं एवं फैशन के अनुसार तथा आरामदेह होते हैं। कुर्ता-धोती का स्थान पैन्ट-शर्ट ने ले लिया है एवं युवा महिलाओं में सलवार-सूट का प्रचलन हो चला है। जो आदिवासी नगरों के सम्पर्क में हैं वे सभी प्रकार के वस्त्रों को पहनना पसन्द करते है नगरों में पढने एवं लिखने वाले आदिवाासी ग्रामीण छात्र एवं छात्राएँ भी जींस, टी-शर्ट पहनना पसन्द करते हैं। विवाहित महिलाएँ साड़ी एवं ब्लाउज पहनती हैं।

आभूषण के रूप में टैटूज, पुष्प बीज, पत्तियों, पंखों एवं लड़ों की माला द्वारा श्रृंगार किया जाता था पर आजकल इनके स्थान पर सोने-चॉदी, प्लास्टिक आदि धातुओं के जेवरातों एवं कड़ो का बहुतायत से प्रयोग किया जाता है।

14. जनजातीय नशा सेवन पर प्रभाव

आदिवासियों में शराब का प्रचलन बहुत है। ये स्वयं की बनी शराब पीते हैं। महिलाएँ एवं पुरूष दोनों साथ-साथ शराब पीते है। शराब ये स्वयं ही महुआ, चावल, गेहूँ, जौ, मक्का अन्य मोटे अनाजों से बनाते है, लेकिन महुआ द्वारा निर्मित देशी शराब अब आसानी से सभी जगहो पर सस्ती कीमत पर मिल जाने के कारण इनका आकर्षण इस ओर अधिक होता जा रहा है। पढे-लिखे आदिवासी अंग्रेजी शराब का भी सेवन करते हैं।

बीड़ी, हुक्का चिलम के स्थान पर अब ये उन्नत बीड़ी, सिगरेट आदि का उपयोग करने लगे है।

उपरोक्त तथ्यों के आधार पर यह निष्कर्ष यह निकाला जा सकता है कि आदिवासी पुरूष एवं महिलाएं जो कि नगरों के सम्पर्क में है या किसी औद्योगिक क्षेत्र के सम्पर्क में है वे आधुनिकीकरण के प्रभाव से पूर्णतया प्रभावित हो चुके हैं। यह प्रभाव उनके विकास की और अग्रसर जे जायेगा और एक सकारात्मक क्रम निरन्तर चलता रहा तो भारत की तमाम पिछड़ी जनजातियां राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में जुड़ जायेंगी। विकास के इस क्रम में ये जनजातियां राष्ट्रीय विकास की मुख्यधारा में जुड़ जायेंगी । विकास के इस क्रम में ये जनजातियां भी अन्य जातियों के साथ कन्धा मिलाकर अपने क्षेत्र प्रदेश एवं राष्ट्र के विकास में अपनी अहम् भूमिका अदा करेंगी।

जड़ो मे ही जुड़ाव है। आदिवासी (जनजाति) संस्कृति मध्यप्रदेश एवं राष्ट्र की नैसर्गिक धरोहर है जिसमें आदिम जीवन पक्ष सकारात्मक परिलक्षित होते है। उनका आहलाद हमारी ऊर्जा है और उनका जीवन संर्घष हमारी प्रेरणा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

१.आदिवासी धरोहर मध्यप्रदेश (TRIBAL HERITAGE MADHYA PRADESH) (आदिम जाति अनुसंधान संस्थान म.प्र.) भोपाल २००३
२.सरकार एवं मुनीम (१९९७) भारत का संविधान संक्षिप्त टिप्पणियों सहित
३.श्रीवास्तव डॉ डी.एन. (२००१), अनुसंधान विधियॉ साहित्य प्रकाशन आगरा
४.स्मारिका ९ जनवरी २०१२ पंडित कुँजीलाल दुबे राष्ट्रीय संसदीय विद्यापीठ पुराना विद्यान सभा परिसर, भोपाल (मध्य प्रदेश)
५.सामान्य अध्ययन मध्यप्रदेश लोकसेवा आयोग की राज्य सिविल अध्ययन (राजभाषा एवं संस्कृति संचालनालय मध्यप्रदेश) मध्यप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल
६.डॉ. एम.एम. लवानिया, राशी के जैन SOCIOLOGY OF TRIBES IN INDIA भारत में जनजातियों का समाजशास्त्र
७.डपकार महिला अधिकार और भारतीय प्रावधान (सीमा कुमारी) उपकार प्रकाशन, आगरा- २

श्रीमती सुनीता पन्द्रो
शोधार्थी , एम.ए. नेट क्वाली फाइड ,(समाज शास्त्र) , बरकातउल्ला विश्वविद्यालय भोपाल .